शंकर का अद्वैत वेदान्त
ब्रह्म विचार

B.A I Hons
I paper
Philosophy 18.5.20

Page No. ______
Date ______

भारतीय दर्शनों में सर्वाधिक विकसित वेदान्त दर्शन को माना है। प्राचीन काल में वेदान्त शब्द का प्रयोग उपनिषद के लिए किया जाता था क्योंकि उपनिषद वेद की अंतिम कड़ी है परन्तु आगे चलकर नहीं उपनिषद को वेदान्त का नाम दिया गया।

वेदान्त दर्शन का आधार बादरायण द्वारा रचित ब्रह्मसूत्र को माना जाता है। ब्रह्मसूत्र को अनेक नामों से पुकारा जाता है, जैसे- वेदान्त सूत्र, शारीरिक सूत्र, शारीरिक मीमांसा एवं उत्तर मीमांसा। वेदान्त दर्शन के मुख्य चार सम्प्रदाय हैं (1) अद्वैतवाद (2) विशिष्टाद्वैतवाद (3) द्वैतवाद (4) द्वैताद्वैतवाद

जीव और ब्रह्म के बीच कैसा सम्बन्ध है यही वेदान्त दर्शन का मुख्य प्रश्न है। शंकर के अनुसार जीव और ब्रह्म अद्वैत है अर्थात वे दोनों ही एक है। शंकर का दर्शन इसी आधार पर अद्वैत कहलाता है। शंकर एकतत्ववादी है उन्होंने ब्रह्म को ही एक मात्र परमार्थ सत् कहा है। शंकर ने ब्रह्म को पारमार्थिक दृष्टिकोण से पूर्णतः सत्य कहा है ब्रह्म को स्वयं प्रकाश कहा गया है। ब्रह्म आनंद एवं विज्ञान है। वह सच्चिदानन्द, निर्गुण परम चैतन्य है। सभी विषयों का आधार है वह देश, काल निमित्त से परे सन्मात्र है। वह त्रिकालातीत है एवं कार्य कारण से उपर है।

ब्रह्म एकतत्ववादी है ब्रह्म को ही एक मात्र सत्य माना है। ब्रह्म को छोड़ कर शेष सभी सत्य नहीं है शंकर ने ब्रह्म को निर्गुण कहा है। उपनिषद के

शंकर का अद्वैत वेदान्त
ब्रह्म विचार

B.A I Hons
I paper

भारतीय दर्शनों में सर्वाधिक प्रसिद्ध वेदान्त दर्शन माना है। प्राचीन काल में वेदान्त शब्द का प्रयोग उपनिषद के लिए किया जाता था क्योंकि उपनिषद वेद की अन्तिम कड़ी है परन्तु आगे चलकर नहीं उपनिषद को वेदान्त का नाम दिया गया।

वेदान्त दर्शन का आधार बादरायण द्वारा रचित ब्रह्मसूत्र को माना जाता है। ब्रह्म सूत्र को अनेक नाम से पुकारा जाता है, यथा- वेदान्त सूत्र, शारीरिक सूत्र, शारीरिक मीमांसा एवं उत्तर मीमांसा। वेदान्त दर्शन के मुख्य चार सम्प्रदाय हैं (1) अद्वैतवाद (2) विशिष्टाद्वैतवाद (3) द्वैतवाद (4) द्वैताद्वैतवाद

जीव और ब्रह्म के बीच कैसा सम्बन्ध है यही वेदान्त दर्शन का मुख्य प्रश्न है। शंकर के अनुसार जीव और ब्रह्म अद्वैत है अर्थात वे दोनों ही एक है। शंकर का दर्शन इसी आधार पर अद्वैत कहलाता है। शंकर एक तत्ववादी है उन्होंने ब्रह्म को ही एक मात्र परमार्थ सत् कहा है। शंकर ने ब्रह्म को पारमार्थिक दृष्टिकोण से पूर्णतः सत्य माना है ब्रह्म को स्वयं प्रकाश कहा गया है। ब्रह्म आनंद [illegible] एवं विज्ञान है। सच्चिदानन्द, नित्य, परम [illegible] है। सभी विषयों का आधार है वह देश, काल निमित्त से परे सम्भाव है। वह त्रिकालातीत है एवं कार्य कारण से ऊपर है।

ब्रह्म एक तत्ववादी है ब्रह्म को ही एक मात्र सत् माना है। ब्रह्म को छोड़ कर शेष सभी सत्य नहीं है शंकर ने ब्रह्म को निर्गुण कहा है। उपनिषद में